॥ ओ३म् ॥

प्रभु से विनय

हे प्रभु! हे मेरे जीवन के संचालक! तू आकर हमें तपस्वी बना। हमें योगी बना। प्रभु! अब मुझे किसी ने संकेत कराया है कि तू तपस्वी बन। हे प्रभु! मेरे जीवन में, मेरे हृदय में जो नाना प्रकार की त्रुटियाँ हैं, उन त्रुटियों को मुझ से दूर करो, मैं त्रुटिदायक नहीं बनना चाहता। प्रभु! मेरा जीवन आपकी कृति में हो, मेरा जो जीवन है, मेरी जो संकलन धारा है, वह आपकी कृति में होनी चाहिए।

सुन्दर यज्ञ करने को देव पूजा कहा जाता है, जिसमें देवताओं का आदर होता है, देवताओं के लिए हवि प्रदान करते हैं। यजमान की अवस्था सौ वर्षों की होनी चाहिए। हे परमात्मन! आप अधिक से अधिक अवस्था दीजिए, जिससे विधाता! हमारा जीवन सँसार में पवित्र बनता जाए, और हम अपनी मानसिक इन्द्रियों को सुन्दर करते चले जाएँ। हम परमात्मा की कृति को हम उस परमात्मा को प्रातः और साँयकाल धन्यवाद करते चले जाएँ, जिससे हृदय में मानसिक बल आता चला जाए और **जिस मानव के हृदय में मानसिक बल होता है वह किसी भी काल में रुग्ण नहीं होता, उसको किसी प्रकार का भी दुःखद नहीं होता।** वह सदैव एक रस बना रहता है। निर्द्वन्द बना रहता है, ब्रह्मचर्यता को ले करके चलता है, अग्नि को ले करके चलता है, प्रकाश को ले करके चलता है और उस प्रकाश में वह प्राणी रहता है, जिसके पश्चात् अन्धकार नष्ट होता चला जाता है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

अंक : 550 कुल पृष्ठ संख्या समग्र अंक : 625
वर्ष : 46 44 समग्र वर्ष : 53

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1. प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	3
2. अनुक्रम		4
3. जीवन और आत्मीयता	पूज्यपाद-गुरुदेव	5-20
4. माता और आचार्यों के उपदेश	पूज्यपाद-गुरुदेव	21-36
5. ऋषियों के उद्‌गार		37
6. दान, पुस्तकों की सूची व पुस्तक प्राप्ति के स्थान तथा सूचना इत्यादि		38-42

श्रावणी पर्व

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा और पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की पावमानी प्रेरणा से रक्षाबन्धन के शुभावसर पर दिनाँक 26-8-2018, दिन रविवार को प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी लाक्षागृह, बरनावा में सामवेद ब्रह्म-पारायण महायज्ञ का आयोजन श्री गाँधी धाम समिति द्वारा आयोजित किया जा रहा है। आप सभी इस यज्ञ में अपने परिवार, सगे-सम्बन्धियों एवम् मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

श्री गाँधी धाम समिति (पञ्जी.)

।। ओ३म् ।।

जीवन और आत्मीयता

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है अथवा उसके ज्ञान और विज्ञान का प्रायः वर्णन होता रहता है क्योंकि परमपरागतों से ही हमारे ऋषि-मुनि एक-एक वेद मन्त्र को ले करके बहुत ऊँची-ऊँची उड़ाने उड़ते रहते थे। वह यज्ञ-सूत्रों में ब्रह्माण्ड को पिराने का प्रयास प्रायः करते रहते थे और अपने मानवीय जीवन को उसी सूत्र में पिरोने का प्रयास करते थे। **मानव के जन्म-जन्मान्तर समाप्त हो जाते हैं, उस सूत्र में अपने जीवन को पिराते हुए, परन्तु वह पिरोया नहीं जाता और जब पिरोया जाता है तो उस सूत्र का एक मनका बन करके इस सर्वत्र सूत्रों का एकोकीकरण बन जाता है।** तो इसलिए कई समय हो गया है हम यज्ञ सूत्रों में अपने को पिराने का प्रयास कर रहे हैं और अपने को पिरोना चाहते हैं वह उत्कट इच्छा बनी रहती है कि हम यज्ञमयी अपने को पिराने वाले बन जाएँ।

जीवन को यज्ञ सूत्र में पिरोने की प्रेरणा

परमपिता परमात्मा का यह जो अनूठा याग है जो कहीं यह अग्निहोत्र के रूप में दृष्टिपात आ रहा है, कहीं यह देव याग के रूप में दृष्टिपात आता है, कहीं यह पितरों के याग में दृष्टिपात आ रहा है, कहीं यह अतिथि याग के रूप में दृष्टिपात आ रहा है। तो यह

भिन्न-भिन्न प्रकार के यागों का क्रियाकलाप है। यह प्रायः मानव के मस्तिष्कों में सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर के वर्तमान के काल तक की स्थलियों में निहित रहा है और बुद्धिमानों के मस्तिष्क में नृत्य करता रहता है। तपस्वियों का हृदय उससे तपश्चर बन जाता है। तो विचार क्या मेरे पुत्रो! हमें अपने जीवन को यागों में परणित कर देना चाहिए, समर्पित करना ही एक बलि स्थिति कहलायी जाती है, समर्पित करना ही हमारे लिए एक चरु कहलाती है और चरु को जब हम प्रदान कर देते हैं, वह दूसरों को सुगन्धि देती है और स्वतः अपने रूप को भस्म कर देती है। तो इसी प्रकार हम एक-एक वस्तु से शिक्षार्थी बनें और शिक्षा ले करके हम अपने को उस ब्रह्म सूत्र में पिराने वाले बनें जो यज्ञोमयी स्वरूप है, जिसका वह आयतन माना गया है। कई समय हो गए हैं विचार देते हुए आज भी मेरे प्यारे महानन्द जी मुझे प्रेरणा देते रहते हैं यागों के सम्बन्ध में बहुत-सी विचारधाराएँ। पुरातन काल में हमने अनुसन्धान भी किया था, वह अनुसन्धान की वार्ता भी तुम्हें प्रगट कराते रहते हैं।

आज मुझे कोई अपनी विशेष विवेचना तो देनी है ही नहीं परन्तु इस संदर्भ में मेरे प्यारे महानन्द जी बड़े उत्सुक हैं कि मैं अपने विचारों को व्यक्त करूँ। प्रायः उनके विचार तो दाह युक्त होते हैं और वह ऐसे विचार हैं जिन विचारों का कोई हमारे विचारों में तो उसका ऊर्ध्वाकरण नहीं हो सका। परन्तु वह इनके हृदय में वेदना ही बनी रहती है और वह वेदनामयी शब्दों का उद्घोष करती रहती थी। परन्तु आज का हमारा विचार क्या कह रहा है कि हम अपने में याज्ञिक बन करके अपने जीवन को यज्ञ सूत्र में पिराने का प्रयास करें। संसार का जितना भी आत्मीयकर्म है, आत्मीय क्रियाकलाप है वह सर्वत्र एक याग के रूप में परणित किया गया है जितना भी मानव का सुविचार, जो अन्तरात्मा से उद्गार उत्पन्न होते हैं। चाहे वह सूर्यमण्डल में जाने के हों, चाहे वह मङ्गल में जाने के हों, चाहे वह पृथ्वी के ऊपर भिन्न-भिन्न प्रकार की

गतियों में जाने वाले हों, परन्तु वह सर्वत्र एक याग के रूप में प्रायः हमें दृष्टिपात आता है। जैसे परमपिता परमात्मा का सखा परमात्मा ही की चर्चा कर रहा है और वही एक याग के रूप में उसका परिवर्तन होता रहता है। तो विचार क्या? सर्वत्रता में जितना भी सुआत्मीय मानवत्व स्थली पर एक याग की विवेचना प्रायः हमारे मस्तिष्कों में नृत्य करती रहती है। आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ अब मेरे प्यारे महानन्द जी अपने दो शब्द उच्चारण करेंगे क्योंकि इनके हृदय में एक दाह रहती है, एक वेदना और विडम्बना बनी रहती है। उस विडम्बना के रूपों में अपने विचार व्यक्त कर ही रहे हैं। बहुत समय हो गया है संसार का परिचय देते रहते हैं। आज भी पुनः से उसका परिचय देने वाले हैं।

पूज्य महर्षि महानन्द मुनि जी के उद्‌गार

ओ३म् गतौशन्नाः वाचन्नमम् ब्रह्मः गृहणन्त्वाः।

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मेरे भद्र ऋषि मण्डल! और मानव समाज! मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अभी-अभी यागों की भूमिका बना रहे थे और याग के सम्बन्ध में इनका जो अनूठा अध्ययन है संसार की प्रत्येक वस्तुओं का ला-ला करके वह हमारे समीप नियुक्त करते रहते हैं। परन्तु आज जो यह आधुनिक एक प्रतिक्रिया का जो काल उद्‌बुद्ध हो रहा है, अभी-अभी हमारा एक याग सम्पन्न होने के रूप में हमें दृष्टिपात हुआ। मेरा अन्तरात्मा बड़ा प्रसन्न रहता है, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव तो गम्भीर समुद्र में चले जाते हैं और वह ऐसा गम्भीर समुद्र है जिसमें नाना प्रकार के रत्नों और स्वर्णमयी धाराओं को ला करके हमारे समीप नियुक्त करते रहते हैं। परन्तु मैं तो इतना नहीं क्योंकि पूज्यपाद गुरुदेव के समीप यदि मैं अपनी धृष्टता करूँगा, तो यह मेरे लिए प्रियतम नहीं होगा। मेरे पूज्यपाद तो आत्मा-परमात्मा की क्या याग के ऊपर बहुत अध्ययन संसार के प्रायः वस्तुओं में रत्त नहीं हुए। परन्तु मैंने बहुत अध्ययन करने के पश्चात् पूज्यपाद गुरुदेव से एक ही वाक् पाया है कि **संसार में**

मानव को अपनी मानवीयता को विचित्र बनाना है। पूज्यपाद कह रहे थे इससे पूर्वकाल में प्रत्येक मानव को अपनी आचार-सँहिता का निर्माण करना चाहिए। जब तक हमारी आचार-सँहिता पवित्र नहीं होगी तो हमारा जीवन उद्‌बुद्ध नहीं हो सकेगा। आज यज्ञ की पूर्णता पर मेरा तो विचार सदैव यजमान् के साथ रहता है। हे यजमान् तेरे जीवन का सौभाग्य प्रायः अखण्ड बना रहे क्योंकि अखण्डमयी ज्योति एक श्रद्धामयी ज्योति जागरूक हो जाती है वह श्रद्धा की श्रद्धामयी जो देवी है वह मानव हृदय में उद्‌बुद्ध हो जाती है और सुप्रेरणा उसे प्राप्त होने लगती है। वह प्रेरणा यागों के रूप में हे यजमान्! तेरे जीवन की धारा, यह जीवन की धारा बन करके रहे और जीवन की धारा बन करके क्योंकि यह जो आधुनिक काल का युग मुझे दृष्टिपात आ रहा है, यह युग वास्तव में महापुरुषों का युग तो परम्परा से रहा है, परन्तु यह जो युग है इसमें जहाँ महापुरुष भी हैं तो वहीं वाममार्ग का विशेष प्रसार हो रहा है।

वाममार्ग का स्वरूप

वाममार्ग किसे कहते हैं? मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव को बहुत पुरातन काल में निर्णय कराया आधुनिक काल में जो याग का खण्डन करता है, जो याग को जानता नहीं है, जो याग के स्वरूप के प्रति अपने स्वरूप को मिलान नहीं कराता, वह एक वाममार्गी कहलाता है। परन्तु जैसे-जैसे मध्यकालीन अतीत के काल में एक वाममार्ग सम्पदा बना था और वाममार्ग सम्पदा ने इस याग को प्राप्त करना चाहा। इसमें मांस इत्यादियों की आहुति देना, गौ इत्यादियों के मांस की और इनके अङ्गों की आहुति देना, उनका एक नृत्य बन गया था। आधुनिक काल में जब मैं दृष्टिपात करता हूँ वह काल तो अतीत में चला गया। जो मैं आधुनिक काल में दृष्टिपात करता हूँ तो सर्वत्र यह जो ब्रह्माण्ड यह जो संसार है, पृथ्वी मण्डल है इसमें बीज के अँकुरों को त्याग करके मैं यह

कह सकता हूँ कि अब इस समय जो वाममार्ग का प्रसार है वह बहुत ही उससे महाबलवती बना हुआ है। प्रत्येक मानव दूसरे के प्राणियों के रक्त को पान कर रहा है, दूसरे के प्राणियों को पान करके अपने उदर की पूर्ति करने और अपने ऐश और उल्लास को उन्नत करना चाहता है। मैं यह कहता हूँ कि ऐसे उल्लास से समाज का जीवन कैसे बनेगा?

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने इससे पूर्वकाल में एक राष्ट्र का मुझे वर्णन कराया था। इन्होंने राष्ट्र का एक रूपक दिया, मुझे और उससे हमें यह भान हो गया कि राजा ही यहाँ वाममार्गी है जो प्राणियों को अग्नि में तपा करके उनके रसों का पान करने वाला वह राजा नहीं, वह वाममार्गी कहलाता है। **वाममार्ग कहते हैं जो उल्टे मार्ग को गति करता है,** उसका सुयुक्त-मार्ग नहीं, परन्तु मैं यह उच्चारण कर रहा हूँ कि जो मानव मांस का भक्षण कर रहा है, जो दूसरे के गर्भ को पान कर रहा है, वह सब वाममार्ग की प्रतिभा है, यह सब वाममार्ग कहलाता है। मैं यह कहता रहता हूँ अपने पूज्यपाद गुरुदेव से बारम्बार कि यह जो वाममार्ग की प्रथा यह कहाँ जा करके इसका शमन होगा। जब मैं यह विचारता हूँ कि देखो यहाँ मुहम्मद के मानने वाले जब गोष्ठियाँ करते हैं तो यह कहते हैं कि हमारा जो मत है, हमारा जो मदप्रही रूढ़ि है वह एकोकी ईश्वर के ऊपर निर्धारित है। परन्तु यह द्वितीय जो धर्म के आलम्बी हैं यह नाना देवी-देवताओं को स्वीकार करते हैं। यह कुछ में बिखरे हुए हैं परन्तु इनके विकृत हो रहे हैं। मैं भी कह रहा हूँ, वही नहीं कहते, मैं भी उच्चारण कर रहा हूँ। परन्तु जब मैं उनके द्वार पर जाता हूँ, यह कहता हूँ कि तुम्हारे यहाँ जो एक वाममार्ग की प्रथा बनी, देखो जब इसको तुम स्वीकार करते हो, मैं मुहम्मद हूँ परन्तु मुहम्मद का प्रारम्भ का जो समाज हुआ, उस समाज में कोई भी प्राणी उनके अङ्ग-सङ्ग आने वाला कोई भी मांस भक्षण करने वाला नहीं था, कोई भी मांस भक्षण नहीं करता था। केवल अन्नाद् की महात्मा मुहम्मद ने, मैं महात्मा तो उसे नहीं कहता हूँ, यह राष्ट्रीय स्थल वाला कह सकता हूँ। उनकी पत्नी ने देखो 12 वर्षों का बहुत

काल तक उन्हें सत् अन्नाद का पान कराया जो ऋषि-मुनि किया करते थे पुरातन काल में। उस अन्न को तपा करके देती थी, उसी में वह महान् बन गए थे, महानता की ज्योति आ गई थी। उसका परिणाम यह हुआ कि जो उस राष्ट्र में दूसरे के प्राणों को भक्षण करने वाले थे, वह दूसरों के अनब्रहे उसके स्त्रियों, गर्भों को पान करने वाले थे। जब वह स्थलियों पर आए तो उसका उन्होंने खण्डन किया और अच्छाइयों का मण्डन करना प्रारम्भ किया। वह राष्ट्रवादी बन गए।

जब मैं यह विचारता हूँ कि इसके मानने वाले क्या कर रहे हैं? उसके मानने वाले उस वाममार्ग को उन्होंने अपनाया है, जिस वाममार्ग में देखो कहीं भी स्थली ऐसी नहीं है जहाँ अच्छाइयों का अंकुर हमें प्राप्त हो जाए। केवल देखो जितने भी इस मानव का यह स्वभाव है, मन का स्वभाव है जहाँ इसे मन के, प्रकृति के हिंसकवाद इसके समीप आते हैं, यह मन उतना ही प्रसन्न होता है और जितना ब्रह्म के आङ्गन में गति करता है या चेतना में जाने की उत्सुकता में लगता है तो वहीं यह खण्डन में लग जाता है। यह उसका अन्तरात्मा से विरोध करता है, विरोधाभास हो जाता है। जैसे एक मानव परमात्मा के लिए, साधना करने के लिए तत्पर होता है परन्तु वह साधना करता है तो मन ऐसे-ऐसे गति करता है जैसे सूर्य की किरण अपने प्रकाश के लिए गति करती है, ऐसे यह मन गति करता है। वह भी प्रकाश का, प्रकाश की गति भी देखो धुन्ध में चली जाती है परन्तु ऐसा यह गतिवान गति को ले करके भ्रमण करता हैं तो उसकी जो आकाँक्षा है साधक की वह भी अपने में शून्यगति को प्राप्त हो जाती है। नाना प्रकार के संस्कार चित्त के मण्डलों में से ला-लाकर के इसके समीप नियुक्त कर देता है। साधक तो साधक अपने में शून्य बन जाता है। इसी प्रकार मुहम्मद के मानने वालों की यह मैं प्रथा उद्गीत गा रहा था। कि उनके यहाँ वाममार्ग जो प्राणियों का भक्षण करने वाले थे, जो प्राणियों की बलि प्रदान करने वाले हों, बलि के अर्थों को जो समाज नहीं जानता वह भी अज्ञान के

उस गढ़े में परणित हो जाता है, जहाँ उसे प्रकाश का अँकुर प्राप्त नहीं होता। वह मानव कहता है कि मैं बलि दे रहा हूँ।

बलि का अर्थ

अरे मानव! बलि के अर्थों को जानने का प्रयास करो। हमारे यहाँ बलि देना कोई पाप नहीं है। **बलि का अर्थ केवल समर्पित कर देना हैं जब अपने को समर्पित करता है, उसका नाम बलि है।** बलि प्राणी को नष्ट करके उसे आहार करना बलि नहीं कहलाती है। **बलि कहते हैं जो अपने में पुरुषार्थ करता है,** बलि का अर्थ क्या बना?

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे वर्णन कराया था। एक समय हम दोनों एक राजा के याग में पहुँचे थे। उसके यहाँ जितना कृषक समाज था वह निठल्ला बन गया और कृषक समाज ने क्रिया करना प्रायः समाप्त कर दिया था, शून्य बन गए। तो राजा ने उन्हें उल्लासता में परणित कराया और हमें भी राष्ट्र में ले गए। तो वहाँ एक उल्लास की धारा का जन्म हुआ, तो कृषक अपनी बलि देना प्रारम्भ करने लगा पुरुषार्थ करने लगा, अपने को समर्पित कर दिया। तो पुरुषार्थ में उसका परिणाम यह हुआ कि जहाँ बलि दी तो उल्लास बन गया। राजा का राष्ट्र पुनः से सम्पन्न बन गया। गृह-गृह में पुष्पाञ्जलियाँ छा गईं। तो परिणाम यह हुआ उनका कि उनके राष्ट्र में एक महानता का जन्म होने लगा, जो एक वृहा वाचक बनने लगा। पृथ्वी अपने स्वरूप में उद्गीत गाने लगी। तो विचार क्या इस प्रकार का जो वृताम् बलि का अभिप्राय है कि प्रत्येक मानव जैसे देखो अपनी युवावस्था से ले करके वृद्धकाल तक क्रियाकलाप करता रहता है और गृह को अपने में समर्पित करता है, अपने पुत्रो में, पौत्रो में, पत्नी में अपने को समर्पित करता है, तो वह समर्पित करना गृह के लिए उसे बलिदान हो जाना है। यह बलि कहलाई जाती है। यह बलि का अभिप्राय है। परन्तु आधुनिक काल में मुहम्मद के मानने वालों का एक दिवस आता है, वास्तव में तो

प्रतिदिन इस प्रकार का है, जो धर्म के नामों पर वह जो सूक्ष्म राष्ट्रीय प्राणी हैं जो एक-दूसरा प्राणी-प्राणी का सहायक बना हुआ है, परन्तु उसको अग्नि में तपा करके उसको आहार कर जाते हैं, उसको वह बलि कहते हैं। अरे भोले प्राणी! इसका नाम बलि नहीं है। **बलि का अभिप्राय इतना है कि हम प्रभु को अपना समर्पित करना चाहते हैं, प्रत्येक इन्द्रियों को हम ज्ञान से सजातीय बना करके अपने प्रभु में अपने को समर्पित करते रहते, उसका नाम बलि कही जाती है।** वह समर्पित करना है परन्तु मुहम्मद के मानने वालों ने यह एक इस प्रकार का जहाँ गौ का भक्षण है प्राणियों का भक्षण करने लगता है, तो यह प्राणी उस आभा को समाप्त कर गया है जहाँ मानव-मानव में प्रीति की प्रतिभा आ जाए। यह राष्ट्र तक यह रूढ़ि सीमित रह जाती है। उसका परिणाम अशुद्धियाँ प्रतीत होने लगती हैं। उन रूढ़िवादों में यह समाज परणित हो गया है और परणित हो करके एक प्राणी-प्राणी का भक्षण करने के लिए तत्पर हो गया है। अरे! जिन प्राणियों को अपनी गौ माता की बलि, दुग्ध देने वाले पशु की बलि और जो नाना प्रकार के लाभप्रदक बलि प्रदान कर देते हैं उनको नष्ट कर देते हैं, उनको बलि कह करके और अपने को नष्ट नहीं करते, तो उनकी वास्तव में बलि होनी चाहिए। परन्तु यह विडम्बना मेरे हृदय में बनी रहती है।

राष्ट्रीय पद्धति पवित्र हो

मैं राष्ट्र से कहता हूँ हे राजन् यदि तू सुचरित्र है, यदि तू महान् बनना चाहता है तो राष्ट्रीय स्तर पर विद्यमान हो करके ऐसे नियमों को धारण करा समाज से, जिन नियमों को धारण करा करके तेरे राष्ट्र में महानता की प्रतीती होने लगेगी। मुझे वह काल भली-भाँति मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे स्मरण भी कराया है राम के काल में मनु सिद्धान्त को ले करके उन्होंने पद्धति का निर्माण किया था और अपने राष्ट्र में यह घोषणा कराई थी, उनके यहाँ नियमावली बना करती थी, उन नियमावलियों में यह निर्धारित किया कि याग होने चाहिए, सुगन्धि

होनी चाहिए, दुर्गन्धि नहीं होनी चाहिए। दुर्गन्धि की मीमांसा करने वाला, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव तो दुर्गन्धि की मीमांसा भिन्न-भिन्न प्रकार से करते हैं। मैं एक ही मीमांसा करने वाला हूँ और वह मीमांसा यह है कि मानव को अपने विचारों से ले करके, अपनी वाणी से ले करके प्राणी के रक्त को बहाने तक यह केवल अप्रताम् हिंसा कहलाती है। यह दुर्गन्ध कहलाती है। दुर्गन्ध क्या है? एक स्थली पर विद्यमान हो करके पति-पत्नी अपनी स्थलियों पर विद्यमान हैं, बाल्य उनके समीप विद्यमान है। वह जानता है कि यह मेरे माता-पिता हैं। जब वह अपने अपवाद में कोई विवेचना करते हैं, चर्चा करते हैं, तो अशुद्ध बन करके बालक अपवित्र कर देते हैं यहाँ तक हिंसा का कृत बन जाता है। मनु ने, हमारे ऋषि-मुनियों ने यह कहा हे गृह स्वामी! हे गृह स्वामिनी! यदि तुम अपने गृह को ऊँचा बनाना चाहते हो, तो पाँच वर्ष के बाल्य के समीप तुम्हें आमोद-प्रमोद भी नहीं करना चाहिए। वह तुम्हारे बालक के जीवन को अशुद्ध बना देगा, उनमें एक विचारधारा संस्कार की उपलब्धि हो करके और वह आगे आने वाले भविष्य के समय में वह राष्ट्र और विचारों का घातक बन जाएगा। यहाँ तक मीमांसा ऋषि-मुनियों ने की, आचार्यों ने बहुत-सी मीमांसाएँ की हैं कि अशुद्धवाद नहीं होना चाहिए। यदि राजा प्रजा के सुखार्थ के लिए एक वाक् यदि उसमें गर्भपन में उच्चारण होता है वह प्रियतम है और जिससे प्रजा का हनित होता हो, राजा को मिथ्यावादी नहीं बनना चाहिए। मिथ्यावादी वह राजा नहीं बनेगा जिसका आहार और व्यवहार दोनों पवित्र होंगे और जब राजा के आहार और व्यवहार-आहार पवित्र नहीं होगा, आहार अपवित्र होगा तो विचार भी अपवित्र अवश्य बनेगा। आहार इतना पवित्र होना चाहिए कि आहार अपने भुजों की वृत्तियाँ परिश्रम वाला हो। वह अपने में परिश्रम करके उसे बलम् वृहे अपने में पान करने वाला हो और राष्ट्र के लिए अपने हृदय की वेदना प्रकट करने वाला हो। उस अध्याय के अनुसार अध्ययन उसका गम्भीर होना चाहिए।

आधुनिक काल

मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहा था कि आधुनिक यह जो काल चल रहा है यह एक वाममार्ग का काल चल रहा है, क्योंकि राजा वाममार्गी है तो प्रजा भी वाममार्गी है, क्योंकि देखो राजा नाना प्राणियों को पान कर जाता है प्रातःकाल होते ही तो प्रजा भी कर रही है, तो दोनों ही वाममार्गी हैं। तो हम कैसे उच्चारण करकें कि यह समाज पवित्र बन रहा है, यह समाज महान् बन रहा है। जहाँ तक प्रकृति के तत्वों का समन्वय है, विज्ञान का समन्वय है, मैं विज्ञान की विवेचनाओं में ले जाता हूँ, तो विज्ञान मुझे सार्थकता में दृष्टिपात नहीं आ रहा है। विज्ञान का दुरुपयोग, इसलिए है क्योंकि राजा अपने विचारों का दुरुपयोग कर रहा है तो उसके विज्ञान का भी दुरुपयोग हो रहा है और जब विज्ञान की दुरुपयोगिता आ जाती है, उसी काल में देखो रक्तमयी क्रान्ति का उद्घोष होने लगता है, रक्तमयी क्रान्ति की आभा का जन्म हो जाता है। वही रक्त में मानव अपने जीवन को राष्ट्रीयता को बना करके, सांत्वना को प्राप्त हो जाता है।

आज मैं विशेष विवेचना न देता हुआ अपने पूज्यपाद गुरुदेव को यह निर्णय करा रहा हूँ कि हमारी यह आकाशवाणी मृत्युलोक में जा रही है जहाँ यागों का खण्डन और यागों को जानते नहीं हैं। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव यागों की चर्चा कर रहे थे गम्भीरपूर्वक, राजा के राष्ट्रों की चर्चाएँ। राजा के राष्ट्र में मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने वर्णन कराया कि प्रत्येक विद्यालयों में गौ का पालन, उसके गृहस्थ याग होना ब्रह्मचारियों को आहार और व्यवहार में पवित्र बनाना, अध्ययन गम्भीर होना चाहिए। परन्तु पूज्यपाद गुरुदेव ने यागों का वर्णन किया था कि यागाम् विद्यालयों में होने चाहिएँ। आधुनिक काल का विद्यालय कैसा है मैं विचारता रहता हूँ। मैं विद्यालयों में जब भ्रमण करता हूँ आधुनिक काल में वर्तमान के काल में तो विद्यालयों में ब्रह्मचारी कहीं एक-दूसरे के प्राणों को हनन करने की गोष्ठियाँ बना रहे हैं, कहीं विद्यालयों में आचार्यजन यह विचार

रहे हैं यदि ब्रह्मचारियों में विभक्तवाद नहीं हुआ तो तुम्हारा जीवन रहेगा यहाँ। परन्तु मृत्यु का भय लगा हुआ है, मृत्यु के क्षेत्र में प्रवेश हो गए हैं। परन्तु मैं जब विद्यालयों में और गम्भीरता से भ्रमण करता हूँ तो विद्यालयों में जहाँ अमृतमयी सुगन्धि अन्न की होनी चाहिए वहाँ देखो भोज्य अन्न के द्वारा जहाँ अन्न का निर्माण हो रहा है वहाँ दुर्गन्धि उत्पन्न हो रही है, वहाँ मांस इत्यादियों का जहाँ ब्रह्मचारियों का मस्तिष्क अशुद्ध बन रहा है।

मेरे विचारों को आधुनिक काल का प्राणी यह कहता है कि कौन से काल की चर्चा कर रहे हो? परन्तु मैं यह कहा रहा हूँ कि मैं प्रत्येक काल की चर्चा कर रहा हूँ। यह काल यह अच्छाइयाँ प्रत्येक अपने में उन्हें अपने-अपने स्थलियों पर नृत्य करती रही हैं। मैं आधुनिक काल की विवेचना नहीं, भविष्य में तुम्हें प्रतीत होगा कि अतीत में क्या कहते थे, अतीत वाले क्या कह रहे थे,यह अब भी हो रहा है। अब भी वैज्ञानिकजन अपनी-अपनी गोष्ठियाँ कर रहे हैं और गोष्ठियाँ करके यह विचारते हैं अतीत के ऋषि-मुनियों ने जो विचार दिया था उसको हम यन्त्रों में ग्रहण करना चाहते हैं। परन्तु देखो वह यन्त्र का निर्माण ही नहीं हुआ। वह यन्त्र का निर्माण तो महाराजा भारद्वाज मुनि की विज्ञानशाला में दृष्टिपात होता रहा है, उद्दालक गोत्र के ऋषियों में उनके सौ-सौ महापिताओं के विचार और उनके चित्र ले करके यन्त्रों में मानव उनका अध्ययन करता रहता था। आधुनिक काल में तो वह चित्रावली नहीं आई, आधुनिक काल में तो वह चित्रावली मानवीय आभा में आ गई है जिस चित्रावली से मानव अपने जीवन को मनोरंजन का एक नृत्य बना रहा है और अपने जीवन को भ्रष्ट कर रहा है, अपने बाल्य बालिकाओं को अग्नि के मुखारबिन्दु में परणित कर रहा है। परन्तु देखो आधुनिक जगत् जब यह वृद्धकाल आएगा समाज का उस समय यह मानव अनुभव करता है कि तुमने अपने जीवन में महानता का कोई क्रियाकलाप नहीं किया।

याज्ञिक बनने की प्रेरणा

आज मैं इन विचारों को विशेषता में नहीं देना चाहता हूँ। विचार केवल यह है कि आज का हमारा वाक् यह कह रहा है कि हम याज्ञिक बनें। मेरा सदैव यह विचार रहता है यजमान् तेरे विचारों में यागों की धारणा बनी रहे क्योंकि इस वाममार्ग के काल में तेरी एक धारणा बन गई है कि में याज्ञिक बनूँ, मैं सुगन्धि में जगत् को परिवर्तित करना चाहता हूँ, अपने जीवन को सुगन्धि में परणित करता हूँ। आज सर्वत्र द्रव्य का अपव्यय व दुरुपयोग हो रहा है और मैं यजमान् को यह कहकर यजमान् तेरे जीवन की धारा बनी रहे क्योंकि तेरे दृव्य का यह ऊँचा सदुपयोग है, यह देवताओं का कर्म है, देवताओं का क्रियाकलाप है। जब ऋषि-मुनि विराजमान होते हैं तो नाना प्रकार के यागों के ऊपर हम चर्चाएँ करते रहते थे। अन्तरिक्ष में अपने विचारों को सुगन्धि के सहित उद्बुद्ध कराते रहते थे, जिससे अशुद्धवाद समाप्त हो जाए। आधुनिक काल में जो दोषारोपण हो रहा है, प्रदूषण हो रहा है, वायुमण्डल छायमान हो रहा है। वैज्ञानिक कहता है आधुनिक काल का कि वह काल दूरी नहीं है, वह काल देखो निकट आ रहा है जिस काल में 'अग्निम् ब्रह्मः वाचाः जहाँ अग्निम् बृहे लोकाम् निर्वृताः' आधुनिक काल का विज्ञान यह कहता है वह काल दूरी नहीं है जब मानव की साँस लेते ही मृत्यु हो जाएगी, शरीर का त्याग हो जाएगा। परन्तु देखो ऐसा आधुनिक काल का वैज्ञानिक कह रहा है। जब मैं यह विचारता हूँ कि आधुनिक काल का वैज्ञानिक यह कहता है, परन्तु उसका उपराम भी वह अपने में ही विचारता है कि गौ घृत के द्वारा अग्नि में प्रवेश करने से परमाणुओं का जन्म होता है, वह अशुद्ध परमाणुओं को निगल करके उसका शुद्धीकरण कर देता है। ऐसा आधुनिक काल का विज्ञान अपने में किसी-किसी काल में घोष किया करता है, समुद्रों में परणित होता रहता है। ऐसे-ऐसे यन्त्रों का निर्माण पुरातन काल में महाभारत के काल में रहा है जो आधुनिक काल में भी, वर्तमान काल में भी

यान अन्तरिक्ष में गति कर रहा है, चन्द्रमा और पृथ्वी के आकर्षण-शक्ति के मध्य में भी यन्त्र अब तक विद्यमान हैं, चन्द्रमा और बुद्ध के दोनों की आकर्षण शक्ति के द्वारा आज भी यन्त्र विद्यमान हैं। वह यहाँ के प्राणियों को निगल रहा है, वह विज्ञान, विज्ञान से मिलान करके यहाँ के विज्ञान को समाप्त कर देता है। इस प्रकार विज्ञान आधुनिक जगत् में दृष्टिपात होता रहा है, मैं यह दृष्टिपात करता रहता हूँ।

एकलव्य के यान

पूज्यपाद गुरुदेव से यह वर्णन करता रहता हूँ। हमारे यहाँ देखो महाभारत के काल में एकलव्य ने ऐसे-ऐसे यन्त्रों का निर्माण किया था, वह द्रोणाचार्य की सहायता ले-ले करके, वह यान आज भी चन्द्र सूर्य की परिक्रमा करते रहते थे और लाखों वर्ष की आयु है यानों का, लाखों वर्ष आयु यन्त्रों का है, वह यान अपने में गति कर रहा है, परिक्रमा वृत हो रहा है।

पूज्यपाद-गुरुदेव का यागों पर चिन्तन और मनन

मैं विशेष चर्चा न देता हुआ पूज्यपाद गुरुदेव को मैं अपने परिचय कराना चाहता हूँ कि यह जो समाज है, इसको महान् बनाने के लिए यागों का आश्रय लेना होगा। याग की एक ही व्याख्या नहीं है, इसकी एक ही मीमांसा नहीं है, अग्निहोत्र करना याग है क्योंकि इससे देवता, यह कौन देवता है, हमारे शरीरों में क्रियाकलाप करते रहते हैं। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने तो देवयाग के सम्बन्ध में बहुत-सी विवेचना दी हैं। मुझे तो वह काल स्मरण आता रहता है जब यह मानो कदली वनों में विद्यमान हो करके एक देवयाग के ऊपर यह देखो दो-दो वर्षों तक एक ही विषय के ऊपर चिन्तन और मनन करते रहते थे। उस चिन्तन मनन की शैली बड़ी विचित्र, गहरे अगाध समुद्र में चले जाते, समुद्रों में नाना प्रकार के रत्नों को ला करके वह लेखनियों में बद्ध करते रहे

हैं। क्योंकि **रस सँहिता शृङ्गशाखा** जो अतीत के कुछ काल के पश्चात् देखो यहाँ मुहम्मद के मानने वालों के काल में राष्ट्रीयता आने से वह अग्नि के मुखारबिन्दु में परणित हो गए।

मानवीय दर्शन की पद्धति को धारण करें

मैं इस विषय में विशेष चर्चा दे नहीं रहा हूँ विचार केवल यह उद्बुद्ध कर रहा हूँ कि प्रत्येक मानव को याज्ञिक बनना चाहिए। मेरी प्यारी माता शृङ्गार में प्रसन्न हो रही है। जब मैं यह विचारता रहता हूँ माता को अपने पुत्र को सजातीय कितना बनाती है, तो माता मौन हो जाती है। माता का कर्त्तव्य है कि वह शृङ्गार में परणित न हो करके, वह केवल अपने पुत्र को शृङ्गारित बना दे और पुत्र को बुद्धिमान बना करके, विवेकी बना करके ऊर्ध्वा में गति कराने वाला। माता तेरा जीवन उस काल में सफल होता है, तू याज्ञिक बन जाती है, तू यागों में परणित हो जाती है। **तेरा जो याग है वह तेरा पुत्र है।** यदि तू उसे महान् बना देती है, बाल्य को ऊँचा बना देती है, तो उसकी सुगन्धि ओत-प्रोत होती हुई सर्वत्रता में परणित हो जाती है। आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ, मैं कोई व्याख्याता नहीं हूँ, मैं तो अपने पूज्यपाद गुरुदेव को कुछ परिचय देने के लिए आया और यह परिचय क्या है? वह विडम्बनामयी है। मैं यजमान् को अपनी शुभकामना प्रकट कर रहा हूँ, हे यजमान् आधुनिक जगत् तो वाममार्ग के क्षेत्र में जा रहा है याग जैसे कर्मों को वह पाखण्ड की मीमांसा, पाखण्ड की भाषा कह करके मौन हो जाता है। अरे मानव! जो तू क्रियाकलाप कर रहा है क्या वह पाखण्ड नहीं है? सुरा और सुन्दरियों में पान कर रहा है, क्या वह पाखण्ड नहीं है? जो तुझे सुविचार जो मानवीयता जो ऋषि-मुनियों का एक अनुपम विचार है, उसको पाखण्ड कह करके तू अपने में मौन हो जाता है। परन्तु देखो आज का विचार मैं विशेष न देता हुआ केवल यह उच्चारण कर रहा हूँ, हे मानव! तू अपनी मानवीयता को ऊँचा बना करके तेरे राष्ट्र में

भिन्न प्रकार की रूढ़ि नहीं रहनी चाहिए। यह जो रूढ़ियों के ऊपर रक्त के एक प्राणी, प्राणी का भक्षक हो रहा है, रक्त को पान कर रहा है यह तेरे राष्ट्र में नहीं होना चाहिए। यह तेरी राष्ट्रीयता की धृष्टता है। तेरा हृदय आत्मबल इतना बलिष्ठ नहीं हुआ है, जो तू राज्य का अधिकारी बन जाए, तुझे राष्ट्र का अधिकार नहीं। राष्ट्र का अधिकार उसको होता है जिसका आत्मा बलवान होता है। जो ब्रह्म ज्ञान में रत्त होता है। पुत्र और प्रजा का न्यायालय में एक-सा न्याय करता है, वही तो राजा होता है। परन्तु देखो वह राजा निर्भय हो करके, जब राजाओं को मृत्यु का भय लगा रहता है तो वह राष्ट्र प्रियता नहीं कहलाता।

आज मैं विशेष चर्चा प्रकट करने नहीं आया हूँ। केवल यह वाक् उच्चारण करने के लिए कि यह मृत्यु विडम्बना क्यों बन गई है? राष्ट्र की धृष्टता, उनका स्वार्थवाद, उनका आहार और व्यवहार पवित्र न रहने से नाना प्रकार की रूढ़ियाँ पनपती रहती हैं उन रूढ़ियों को समाप्त कर देना चाहिए। वैदिकता के स्तर पर प्रकाश के मार्ग पर आ जाना चाहिए, प्रत्येक प्राणी को और प्रकाश का मार्ग क्या है, जिसको हम मानव दर्शन कहते हैं। जिसको हम हिंसा कहते हैं वह हिंसा है जो अपने को दुरिता में दृष्टिपात आते ही दूसरों के लिए हम क्रियाकलाप करते हैं तो वह पाप बन करके तुम्हारा ही भक्षक बन जाता है। तो यह विचार देने के लिए तो विशेष नहीं आया हूँ। वास्तव में इन विचारों को तो देता ही रहूँगा, परन्तु आज मैं विशेषता में नहीं जाना चाहता हूँ। विचार केवल यह है कि आज जहाँ यह हमारी आकाशवाणी जा रही है, हमारा शब्द जा रहा है वहाँ एक याग पूर्णता को प्राप्त हुआ है। मैं अपने विचार, केवल यजमान के साथ मेरे विचार रहते हैं और मैं यह कहा करता हूँ हे यजमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, महान् बना रहे, स्थिति ज्यों की त्यों बनी रहनी चाहिए। यह आज का विचार अब हमारा समाप्त होने जा रहा है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

मेरे प्यारे! ऋषिवर आज मेरे प्यारे महानन्द जी ने अपने विचार और राष्ट्र अपने में वाममार्ग प्रथा को धारण कर रहा है, तो राष्ट्र ऊर्ध्वा में प्राप्त नहीं हो सकेगा। मेरे प्यारे महानन्द जी ने बहुत प्रिय अपने वाक् प्रकट किए हैं क्योंकि यथार्थ वाक् मुझे भी प्रिय नहीं लगते, न राष्ट्र को प्रिय हैं। यथार्थ वाक् तो यथार्थ ही होता है। मानव अपनी परम्पराओं को समाप्त न करे। हमारी जो मानवीय दर्शनों की जो प्रथा है, जो वृत्तियाँ हैं अथवा जो उनकी पद्धति हैं, उसे अपने में धारण करना चाहिए। **ऋषि-मुनियों ने तप किया है, तप करने के पश्चात् किसी शब्द को नियुक्त किया है,** वह तपा हुआ है, अकारथ नहीं होता। इसी प्रकार मेरे प्यारे महानन्द जी ने अपने यह अकाट्य शब्दों की प्रतिभा का वर्णन किया है और वास्तव में राजा के राष्ट्र में रूढ़ियाँ या प्रभु के नामों पर नाना प्रकार की हिंसा नहीं होनी चाहिए। यह राष्ट्रीयता का ह्रास है, यह मानव समाज का ह्रास है, यह परमपिता परमात्मा के राष्ट्र को हम दूषित कर रहे हैं। तो आज का यह विचार समाप्त।

जैसा मेरे प्यारे महानन्द जी ने कहा कि 'यज्ञम् भवे वृताम्' हे यजमान! जीवन की सार्थकता सदैव और द्रव्य का सदुपयोग होता रहे, द्रव्य का सदुपयोग होना ही जीवन और मानवीयता को ऊँचा बनाना ही आत्मीयता है। **निर्भयता रहना ही आत्मा का बल** है और देखो अपने में अहिंसक बनना यह दर्शनों की परम्परा है। आज का वाक् समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन होगा।

महर्षि महानन्द जी—अच्छा भगवन्!
पूज्यपाद गुरुदेव—आनन्द रहो!

दिनाँक : 22 सितम्बर, 1985
समय : प्रातः 10 बजे
स्थान : ई-31 लाजपत नगर-3

।। ओ३म् ।।

माता और आचार्यों के उपदेश

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। वह परमपिता परमात्मा का गुणगान गाने वाले परम्परागतों से ही बेटा! उस महान् देव की उड़ानें उड़ते रहते हैं। सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर वर्तमान के काल तक एक ही विषय पर मानव अन्वेषण करता रहा है और नाना प्रकार की लेखनियाँ बद्ध करता रहा है और वह परमपिता परमात्मा के स्वरूप को जानने के लिए तत्पर रहे हैं। दूसरा जो विचार है, मानव के जीवन का जो क्रियाकलाप है, मानव के जीवन की जो चर्चा है उसके ऊपर भी नाना आचार्यों ने, नाना अनुसन्धानवेत्ताओं ने अपने भिन्न-भिन्न प्रकार के विचार दिए हैं। आज मैं उन विचारों को ले करके हमारा वेद मन्त्र क्या कहता है क्योंकि वेद मन्त्रों में भिन्न-भिन्न प्रकार की प्रायः चर्चाएँ आती रहती हैं। वास्तव में मौलिक ज्ञान तो तीन ही वाक्यों में निहित रहता है, ज्ञान, कर्म और उपासना के रूप में परणित रहता है। प्रत्येक मानव की यह उड़ानें रही हैं कि हम ज्ञान और विज्ञान के उस स्वरूप में जाना चाहते हैं जिस ज्ञान और विज्ञानवेत्ता ने इस ब्रह्माण्ड की रचना की है और जो ज्ञान व विज्ञानवेत्ता ब्रह्माण्ड के विज्ञानवेत्ता को जानने के लिए तत्पर रहे हैं। तो दोनों प्रकार के विचारों में मानव

परम्परागतों से बेटा! रत्त रहा है। आज मैं कोई विशेष चर्चाएँ देना नहीं चाहता हूँ। मैं विज्ञान की उड़ानें भी नहीं उड़ना चाहता कि अणु परमाणु कैसे मानव के हृदयों में तरङ्गित होता रहा है। मानवीय मस्तिष्कों में नाना प्रकार की जो जागरूकता होती रही है उसके ऊपर बेटा! हम प्रायः विचार-विनिमय करते रहते हैं।

हमारे यहाँ राष्ट्र वेत्ताओं ने अपने राष्ट्र को त्याग करके और भयङ्कर वनों में जा करके ब्रह्मज्ञान की दीक्षाएँ प्रायः ऋषि-मुनियों से लेना प्रारम्भ किया और इन दीक्षाओं को ले करके उन्होंने जो मार्ग दर्शाया, उसी मार्ग के आधार पर मानव ने अपने जीवन को बनाने का प्रयास किया। तो आओ मेरे प्यारे! मैं बहुत गम्भीर चर्चा तो तुम्हें नहीं देना चाहता हूँ। आज मैं तुम्हें उसी क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ जहाँ माताएँ अपने पुत्रो को जन्म दे करके अथवा पुत्रियो को जन्म दे करके उनको महान् बनाने के लिए प्रयास करती रहती थीं। मुझे नाना ऋषि-मुनियों का जीवन स्मरण आता रहता है। मैं काग्भुषण्ड जी की जब चर्चा करता हूँ, तो उनकी माता की चर्चा करता हूँ तो मेरा हृदय गद्गद् हो जाता है और यह कहा करता हूँ कि निर्माणवेत्ता तो मेरा प्यारा प्रभु है परन्तु जिन तन्तुओं से निर्माण होता है उन तन्तुओं में जो एक विचार की धारा है, तरङ्गों से तरङ्गित होने वाली जो जीवन सत्ता है वह उसे प्राप्त हो जाती है। तो आओ मेरे पुत्रो! मैं विशेषता में नहीं केवल विचार-विनिमय क्या मेरी प्यारी माता अपने ब्रह्मचारियों को पालना करने के पश्चात् वह पाँच वर्ष के पूर्व नाना प्रकार की प्रतियोगिताएँ और उनके प्रति जो सत्-भावना उन्होंने दी उसको पुनः से सञ्चित करते हुए एक पंक्ति में विद्यमान हो करके उनसे नाना प्रकार के प्रश्न कर रही है माता। मेरे प्यारे! मुझे स्मरण आता रहता है तो मेरा हृदय अगम्य बन जाता है। माता सीता के द्वारा दो ही पुत्र थे। वह देवी अपने दोनो बाल्यों को प्रातःकाल में ऋषि के आश्रम में भिन्न-भिन्न प्रकार की शिक्षा देती रहती।

माता स्नेहलता की शिक्षा

केवल सीता का जीवन ही ऐसा नहीं था मुनिवरो! माता स्नेहलता का जीवन भी प्रायः ऐसा था। मुनिवरो! कोण्डली ब्रह्मचारी और काग्भुषण्ड जी और रेणकेतु यह तीन बाल्य थे माता के पुत्र। माता प्रातःकालीन पक्तियाँ लगा करके ब्रह्मचारियों को शिक्षा दे रही है और यह कहती है हे बाल्यो! तुमने मेरी लोरियों का पान किया है तुम्हें महान् और पवित्र बनना है। माता यह वाक्य उच्चारण कर रही है कि तुम्हें अपने विचारों को कैसा बनाना है? मेरे प्यारे माता उच्चारण कर रही है प्रातःकालीन तुम अपनी स्थलियों से पृथक् हो करके अपनी क्रियाओं से निवृत हो आओ और निवृत हो करके एक पंक्ति में माता विद्यमान करा करके भिन्न-भिन्न प्रकार की शिक्षा दे रही है। वेद मन्त्र का उद्घोष करती माता कहती है, हे बाल्य! यह पञ्च याज्ञों का चयन तुम्हें करना है। **सबसे प्रथम प्रातःकालीन ब्रह्म की सृष्टि का, ब्रह्म की रचना का विचार-विनिमय तुम्हें करना है और उस रचना में उस प्रभु का दर्शन करना है और उस रचना में तुम्हें अपना भी दर्शन करना है।**

प्रभु का दर्शन कैसे होता है? मेरे प्यारे! प्रातःकाल का जब सूर्य उदय होता है तो उदय होते ही प्रकाश आता है और उस प्रकाश में जो-जो विभक्त क्रिया पृथ्वी से समन्वय हो करके हो रही हैं उन विभक्त क्रियाओं पर माता कहती है पुत्रो! तुम्हें विचार-विनिमय करना है और वह तुम मेरे से श्रवण करो। मेरे से तुम उन वाक्यों को अपने हृदय में धारण करो। माता कहती है हे बाल्य! यह जो प्रभु का ब्रह्माण्ड है, प्रभु का जो एक माला के सदृश जगत् मुझे प्रायः दृष्टिपात आ रहा है। यहाँ एक-एक मानव की माला बनी हुई है। विचारों की विचारों से माला बनी हुई है। उस माला को तुम्हें विचारना है। उसके जो मनके हैं और धागा है उन दोनों का तुमने समन्वय करना है। जैसे मुनिवरो!

मानव का श्वास गति कर रहा है। हे ब्रह्मचारियों तुम्हारा श्वास गति कर रहा है और प्रत्येक अपने श्वास को तुम मनके में पिरोना चाहते हो, ओ३म् रूपी सूत्र में, ओ३म् रूपी धागे में तुम इसे पिरोना चाहते हो। ब्रह्मचारी शान्त मुद्रा में इसे ग्रहण कर रहे हैं। माता जब लोरियों का पान करा देती है उसमें ओज और तेज का भरण कर देती है तो ब्रह्मचारी अपने में महान् बन जाता है। इसीलिए हमारे यहाँ ब्रह्म-याग का वर्णन आता रहता है। ब्रह्म-याग किसे कहते हैं? ब्रह्म का चिन्तन करना है। माता यह कहती है, हे ब्रह्मचारी! तू उस प्रभु को प्रत्येक स्थली में दृष्टिपात कर। माता यहाँ नाना मन्त्रों का अध्ययन करा देती है और मन्त्रों का अध्ययन करा करके ब्रह्मचारी उसके पश्चात् आचार्यकुल में प्रवेश हो जाते हैं।

जब आचार्यकुल में प्रवेश होते हैं तो आचार्य ब्रह्मचारी को अपना करके कहता है आओ ब्रह्मचारी! तुम अपनी इन्द्रियों के विषयों को मुझे प्रदान कर दो। मेरे प्यारे! माता तो ब्रह्मज्ञान की चर्चा कर रही है। एक पंक्ति में विद्यमान करा करके कहती है, हे बालक! तुमने आचार्य कुल में क्या अध्ययन किया है? कुछ ब्रह्मचारी इस प्रकार का ही आचार्य कुल में विद्या का पठन-पाठन कर रहे हैं। वह गृह में प्रवेश करना नहीं चाहते। परन्तु माता का दायित्व उसके पश्चात् भी बना रहता है। तो मुनिवरो! मुझे कुछ ऐसा स्मरण है, माता कहती है, हे ब्रह्मचारी! तुम देवपूजा करो। देवपूजा का अभिप्राय क्या है? तुम्हें देवताओं का पूजन करना है। आचार्य कुल में जब तुम प्रवेश करोगे तो आचार्य तुम्हारा देवता है। वह चेतन्य बनाता है। तो मुनिवरो! इस प्रकार माता जब शिक्षा देती है तो बाल्य आचार्य कुल में प्रवेश हो करके आचार्य प्रत्येक इन्द्री को अपने में धारण कर रहा है। मेरे प्यारे! आचार्य कहता है, हे ब्रह्मचारी! तुम्हें ब्रह्मचारी बनना है। तुम्हें ब्रह्म का चिन्तन करना है। देवपूजा में तुम्हें जाना है।

देवपूजा की विवेचना

देवपूजा का अभिप्राय क्या है? मुझे एक समय मेरे पुत्रो! महानन्द जी ने यह प्रकट कराया कि यह जो आधुनिक काल व्यतीत हो रहा है इसमें मानव समाज में देवपूजा का अभिप्राय यह स्वीकार कर लिया है कि हमें देवताओं का पूजन करना है और यहीं तक वेद की विद्या का मानो सद्गम्य हो जाता है। मैं यह कहता हूँ ऐसा नहीं है। मुझे महाराजा अश्वपति के यहाँ प्रायः बहुत समय तक वेदों के पठन-पाठन कराने का सौभाग्य प्राप्त होता रहा है। मैंने बहुत पुरातन काल में यह निर्णय देते हुए कहा है कि आचार्य कहता है तुम देवपूजा करो देवपूजा किसे कहते हैं? देवपूजा के सम्बन्ध में बेटा! बहुत-सा हमने अपना विचार दिया। परन्तु आज की देवपूजा उसे कहते हैं जहाँ चेतन्य और जड़ दोनों की पूजा का हमारे समीप एक वाक्य आता है। चेतन्य देवता तो आचार्यजन हैं, पितृजन हैं। पितृों की व्याख्या तो बड़ी विचित्र है। हमारे यहाँ पितृ उसे कहा जाता है जो हमें देता है, स्नेह करता है वह पितृ कहलाता है। केवल पितृ वही नहीं है। हमारे यहाँ चेतन्य भी पितृ कहलाते हैं और जड़वत भी पितृ कहलाते हैं। यह पृथ्वी हमारी माता और पितृ कहलाती है। यह आपो हमारा पितृ और देवता कहलाता है। अग्नि हमारी माता और पितृ कहलाती है। मेरे प्यारे! यह हमारे देवता हैं। यह हमारे देवत्त्व में रत्त रहने वाले हैं। जब बेटा! हम आपो पर विचार करते हैं, या हम पृथ्वी पर विचार-विनिमय करते हैं तो यह पृथ्वी हमारी माता है। यह हमें जीवन प्रदान करने वाली है। इसके गर्भस्थल में वैज्ञानिक प्रवेश करता है तो विज्ञानवेत्ता बन जाता है। उसके गर्भ में जब मैं प्रवेश होता हूँ तो मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि इसके गर्भ-स्थल में क्या-क्या वस्तु विद्यमान हैं? मुझे स्मरण आता रहता है द्वापर के काल का वाक्य भी आता है, त्रेता का काल भी मुझे स्मरण आता है जब माता कौशल्या तप करती थी तो वह तप करती हुई यह

पृथ्वी से कहती थी कि हे पृथ्वी! तू ब्रह्मा के तुल्य है। तेरे गर्भस्थल में नाना प्रकार का परमाणुवाद गति कर रहा है और वही परमाणुवाद हमारे प्राण के द्वारा हमारे में प्रवेश करके हमें वह जन-जीवन दे रहा है। हमें वह महानता प्रदान कर रहा है। जैसे पृथ्वी के एक-एक कण में जीवन सत्ता विद्यमान होती है और वही जीवन सत्ता के मूल में नाना प्रकार का अन्नाद विद्यमान होता है। नाना प्रकार का खनिज विद्यमान होता है। जब विज्ञानवेत्ता इस पृथ्वी के गर्भ में प्रवेश करते हुए माता के ऊपर चयन करते हैं अथवा अनुसन्धान करते हैं और उसमें देवत्व को जानने में लग जाते हैं। तो बेटा! ऐसा प्रतीत होता है कि यह जो पृथ्वी है यह हमारी जननी है। हमें नाना प्रकार के पदार्थों का पान कराने वाली है। यह जो पृथ्वी है इसी के गर्भ में बेटा! याग होता है। यह बालक की नाभि बनी हुयी है। यह विचारों की नाभि बनी हुई है। ''नाभ्याम् ब्रह्मवाचों प्रथः'' मेरे प्यारे! यह पृथ्वी मानव के विचारों की नाभि है। विज्ञान के विचारों की नाभि है और यह नाभि में विद्यमान हो करके जब चक्र गति करता है, बेटा! नाना प्रकार के विज्ञान में मानव रत्त हो जाता है। मेरे पुत्रो! जब पृथ्वी के गर्भस्थल में विद्यमान हो करके मानव देवपूजा करता है और पृथ्वी की पूजा करता है, **पूजा का अभिप्राय क्या है इसको सदुपयोग करना है।** इसको तथ्य में लाना है, विचारों में लाना है। यह पृथ्वी एक माला है।

मुनिवरो! मुझे मेरे प्यारे महानन्द जी ने यह वर्णन कराया है एक समय आधुनिक काल का जो विज्ञानवेत्ता है, वर्तमान का जो विज्ञानवेत्ता है वह तेरह लाख पृथ्वियाँ जान सका है। परन्तु जब यह विचार आता है कि यह पृथ्वी जो इससे भी विशाल, विस्तृत मानी गई हैं। हमारे यहाँ ऋषि-मुनियों ने, वैज्ञानिकों ने समाधिष्ठ हो करके मानो परम्परा के काल से लेकर के आधुनिक काल तक उस काल के वैज्ञानिकों ने पृथ्वी पर अन्वेषण किया और समाधिष्ठ हो गए, वसुन्धरा के गर्भ में प्रवेश हो गए। तो विचारने से यह प्रतीत हुआ कि लगभग तीस लाख पृथ्वियाँ

जानने का प्रयास किया। तीस लाख पृथ्वियाँ अब तक जानी हैं। उन तीस लाख पृथ्वियों का ऐसे समन्वय रहता है सूर्य से जैसे सूर्य की नाना प्रकार की रश्मियाँ उत्पन्न हो रही हैं और रश्मियाँ अपना-अपना नृत्य कर रही हैं। इसी प्रकार नाना चौ-मुखी यह जो सूर्य है और सूर्य की यह जो किरणें हैं, उन्हीं किरणों के आधार पर यह पृथ्वियाँ अपने में निहित हो रही हैं। ऐसा एक चक्र बना हुआ है जैसे भगवान् कृष्ण ने द्वापर के काल में अपने सुदर्शन चक्र का निर्माण किया था। सुदर्शन चक्र की भाँति यह सूर्य चक्र है और पृथ्वी उसके आरे लगे हुए हैं, इसी प्रकार इस ब्रह्माण्ड का चक्र प्रारम्भ हो रहा है। तो विचार आता है कि एक माला बनी हुई है जैसे शब्द से शब्दों का निर्माण होता है और वह एक-एक माला बन जाती है उसी प्रकार यह भी एक माला कहलाती है। माता कहती है अपने ब्रह्मचारियों से हे ब्रह्मचारियो! तुम वैज्ञानिक बनो और तुम कैसे विज्ञानवेत्ता बनो? मानो तुम्हारे हृदय में एक-दूसरे के प्रति सहयोग होना चाहिए। क्रोधाभास नहीं होना चाहिए। यह क्रोधाभास मानव को अन्धकारयम बना देता है और यह जो विज्ञान है यह मानव के जीवन को प्रकाश में ला देता है।

सबसे प्रथम मानव दर्शन

मेरे प्यारे! आचार्य कुल में जब इस प्रकार से शिक्षा या माता एक पंक्ति में विद्यमान करा करके इस प्रकार की शिक्षा को उच्चारण करने लगती है, **वह सबसे प्रथम मानव को मानव दर्शन देती है।** मानव दर्शन इसी से प्राप्त होता है। हमारे जीवन का सम्बन्ध एक-एक परमाणु से रहता है अथवा अणु से रहता है। अणु और परमाणुओं का समूह तो सत्य माना गया है। मानवत्व माना गया है। तो इसी प्रकार हमें विचार-विनिमय करना है। हमें अपने में अन्वेषण करना है। हम मुनिवरो! परम्परागतों से विचारते रहे हैं, आचार्यों ने विचारा है। मेरे पुत्रो! ऐसे-ऐसे लोक-लोकान्तर हैं इस ब्रह्माण्ड में, परमात्मा के राष्ट्र में,

जिनको एक-एक सहस्र सूर्य उसे प्रकाश देते हैं। कैसा अनुपम यह ब्रह्माण्ड है प्रभु का? आज मैं ब्रह्माण्ड की कल्पना करने नहीं जा रहा हूँ। विचार क्या वेद का ऋषि कहता है, माता कहती है, हे ब्रह्मचारियों तुम्हें देवपूजा करनी है और पूजा का अभिप्राय यह उसमें जड़ और चेतन्य दोनों जो देवता हैं उन देवताओं की तुम्हें पूजा करनी हैं क्योंकि वह हमें जीवन सत्ता प्रदान करते हैं। यह जीवन देते हैं। हमारे मानवतत्व को ऊँचा बनाते हैं। मेरे प्यारे! माता-पिता कहते हैं, आचार्यजन कहते हैं कि तुम सु-दृष्टि का पान करने लगो, **संसार के विज्ञान में तुम प्रवेश करोगे या देवपूजा में प्रवेश कर जाओंगे तो यह संसार तुम्हें देवत्व में दृष्टिपात आएगा।**

याग की प्रेरणा

मेरे प्यारे! यह उपदेश मेरी प्यारी माता दे रही है। आचार्य विद्यालय में दे रहा है और कहता है **तुम प्रातःकालीन याग करो।** याग से क्या प्राप्त होता है? मैंने कई काल में तुम्हें वर्णन करते हुए कहा है। नाना प्रकार की रूपकमयी चर्चा हुआ करती हैं और रूपकमयी चर्चा में यह होता है कि यह जो हमारा मानवत्व है, इसमें ब्रह्माण्ड की नाना प्रकार की तरङ्गों का पिरोया हमें अपने में प्राप्त होता रहता है। उस अपने को प्राप्त करना है। हमें अपने जीवन को एक महानता की वेदी पर ले जाना है। मेरे प्यारे! मुझे स्मरण आता रहता है माता अपने में यह उपदेश दे रही है ब्रह्मचारी को महान् बनाने के लिए। तो मुनिवरो! देवपूजा का अभिप्राय क्या है? देवताओं में यह पृथ्वी जो नाना प्रकार का खनिज देती है। **यह आपो है जो मानव को प्राणसत्ता प्रदान करता है।** प्राणी मात्र को यह प्राणसत्ता देता है। कृषक की कृषि मानो सुखद हो रही है और जब यह आपो आ जाता है तो यह जीवन दे देता है और वह जीवन पा करके मुनिवरो! महान् बन जाती है, अन्नाद के रूप में परणित हो जाती है। इसी प्रकार हमें विचारना है कि हम देवताओं

की पूजा करें। **पूजा का अभिप्राय यह है कि उसका सदुपयोग करें।** मेरे प्यारे! यही तो आपो अन्तरिक्ष में रहता है, यही तो आपो समुन्द्रों में प्रवेश करता है। यही आपो जब इसमें नाना प्रकर के धातु पिपाद या औषधियों का मिश्रण हो जाता है, यही आपो बन करके इसी में शिशु प्रवेश हो करके माता के गर्भ में बिन्दु प्रवेश करके वही तो मुनिवरो! पुत्र के रूप में उत्पन्न हो जाता है।

मेरे प्यारे! प्रभु का कैसा अमूल्य यह जगत् है। ब्रह्माण्ड की कल्पना करते ऋषि-मुनियों ने कहा है उसी एक जीवाणु में यह ब्रह्माण्ड निहित रहता है। परमपिता परमात्मा के ब्रह्माण्ड की कल्पना जब मैं करता हूँ, देवपूजा की चर्चाएँ होती रहती हैं। हे आपो! तू तो मेरा जीवन है। यजमान जब अपनी यज्ञशाला में विद्यमान होता है तो आपो को ले करके वह आचमन करता रहता है। क्यों करता रहता है कि तू शीतल है, अमृत है, महान् है, विज्ञान है, स्रोतय है और तू ही एक बिन्दु रूप कहलाता है जिसको जान कर मानव एक महानता की वेदी पर लाता है। तो मेरे प्यारे! यह पितृजन, आचार्यजन, मातृजन इस प्रकार की ब्रह्मचारियों को शिक्षा देते रहते हैं और यह कहते रहते हैं कि तुम्हें मोक्ष को प्राप्त होना है। तुम्हें ब्रह्म की उपासना करनी है। तुम्हें ब्रह्मवर्चोसि में प्रवेश होना है। अपने को ब्रह्ममयी स्वीकार करना है। मेरे प्यारे! इस प्रकार का जब विचार मानव के समीप आता है तो ज्ञान और विज्ञान दोनों मानव के समीप आ जाते हैं। तो आओ मेरे प्यारे! **विचार क्या मैं यह दे रहा हूँ आचार्यजनों की भाषा में और मातृजनों की पवित्र भाषा में यह उपदेश दे रहा हूँ** कि यदि माता यह चाहती है मेरे पुत्र में दुर्भावना न आए। कोई भी शब्द ऐसा नहीं है जो दूरिता भावना वाला बन जाए। क्योंकि जब उसको विचार पर विचार प्राप्त होते रहते हैं, विज्ञान में विज्ञान प्राप्त होता रहता है तो अपने में वह महानता की वेदी पर तत्पर हो करके महान् बनता रहता है।

हमें विज्ञान के युग में देवताओं की पूजा करनी है। देव याग करना है। अग्नि को देवताओं का मुख बनाना है। जब देवताओं का मुख बनाते हैं तो यजमान नाना प्रकार के साकल्यों की आहुति दे रहा है ओर कहता है हे पत्नि! आओ, हम याग करना चाहते हैं। मेरे प्यारे! वह याग कर रहा हैं अग्नि को देवताओं का मुख बना करके उसमें साकल्य प्रदान कर रहे हैं और साकल्य दे करके कहते हैं अग्नि तू महान् है, तू प्रकाश है, हे अग्नि! तू विज्ञान का कुञ्ज है। हे अग्नेय! तू ही तो मेरे शब्द को देवता तक ले जाता है। तू ही तो देवपुरी बना देता है मेरे शब्द को महान् बनाता है। जब इस प्रकार यजमान पत्नी से कहता है हे देवी! तुम अग्नि का ध्यान करो, तुम अग्नि का चयन करो। यही तो अग्नि तेरा जीवन है। यही अग्नि देवताओं का मुख है, जो देवता तेरे गर्भस्थल में शिशु की रक्षा करते हैं। विष्णु की आभा में निहित रहते हैं। वह अपनी वाणी को पवित्र बनाते हुए, अग्नाधान करते हुए और वह देवपुरी को प्राप्त होते हुए उनका शब्द द्यौ तक चला जाता है।

मेरे प्यारे! इसी विचार को ले करके हमारे यहाँ उद्यालक गौत्रीय ऋषियों ने और भी नाना ऋषियों ने अपने पूर्वजों का दर्शन किया है। अपने पूर्वजों की महानता पर पहुँच गए हैं। यही शब्द गति करता हुआ देवताओं की पुरी में प्रवेश कर जाता है। यही तो आभा में नियुक्त करने वाला एक नृत्य कहलाता है जिसको ऋषि-मुनि परम्परागतों से बेटा! करते रहे हैं। मेरी प्यारी माता जब प्रातःकालीन देवपूजा करती है और ब्रह्मचारियों को, बाल्यों को एक पंक्ति में नृत्य कराती है और कहती है हे बाल्यो! आओ तुम अग्नि का चयन करो। अग्नि देवताओं का मुख बन करके आया है। तुम्हारे इस शरीर में अग्नि देवताओं का मुख है और जो अग्नि के मुख में प्रदान करोगे उसे नाना देवता हवि के रूप में पान करेंगे। इस प्रकार से मेरी प्यारी माता लोरियों का पान कराती हुयी एक पंक्ति में विद्यमान करके उसे भरण कर देती है तो

वह बाल्य अज्ञान में क्यों आने लगा? उसे अज्ञान नहीं आएगा। वृद्धपन तक ज्ञान में रत्त रहेगा। उसे अज्ञान नहीं आ सकता।

मेरे प्यारे! मैं राष्ट्रवाद की चर्चा कर रहा था मैं महाराजा अश्वपति की चर्चाएँ कर रहा था। बहुत समय हुआ मैंने बहुत पुरातन काल में भी यह वाक्य प्रकट किए हैं कि महाराजा अश्वपति के यहाँ इस प्रकार की एक राष्ट्रीय घोषणा हुयी थी कि प्रत्येक गृह में देवपूजा होनी चाहिए। मुझे कुछ ऐसा स्मरण है विद्यालयों में क्या, गृहों में क्या प्रत्येक गृह में वेद मन्त्रों की ध्वनि आ रही है। जब राष्ट्र ध्वनित हो रहा है तो राजा अश्वपति मग्न हो रहा है। राजा भी याग कर रहा है और उनकी राजलक्ष्मी भी याग कर रही है। उनके पुत्र भी याग कर रहे हैं, पुत्रियाँ भी याग कर रही हैं। गृह में क्या, राष्ट्र में सुगन्धि आ रही है।

मेरे पुत्रो! हमारी भाषा में दो शब्द बड़े अशुद्ध ''पामर'' और ''धूर्त'' एक-दूसरे पर आक्रमण करने के दो ही शब्द कहलाए गए हैं। हमारी संस्कृति का एक महान् प्रतीक माना गया है। आचार्य जब दण्डित करता है तो ब्रह्मचारी को धूर्त कहता है। और अपशब्दों में आता है तो उसे पामर कहता है। कोई शब्द संस्कृति में या वेद की प्रतिभा में, वेद की भाषा में कोई शब्द अपशब्दों की गणना में आता ही नहीं जैसा मुझे मेरे प्यारे महानन्द जी ने वर्णन किया है। कल मेरे प्यारे महानन्द जी दो शब्द उच्चारण भी करेंगे। आज का विचार हमारा यह है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए बेटा! विचार क्या? हमारे यहाँ आचार्य और मातृ महान् बनाने का प्रयास कर रहे हैं। अपनी प्रतिभा में मानव अपनी मानवीयता का दर्शन कर रहा है, यही दर्शनों को करने के पश्चात् मानव का जीवन एक महान् बन जाता है, पवित्र बन जाता है।

आओ मेरे प्यारे! मैं क्या उद्घोष गा रहा था? वेद का यजमान जब यज्ञ करता है तो अग्नि की धाराओं पर अपने पूर्वजों का दर्शन

करता है। यहाँ मुनिवरो! वेद का मन्त्र एक विज्ञान के युग में भ्रमण कर रहा है, एक विज्ञान की धारा में रमण कर रहा है। मैने बहुत पुरातन काल में निर्णय देते हुए कहा कि **वही वानप्रस्थ ले करके वही तो विद्यालय को पवित्र बनाते हैं।** यही आचार देते हैं और यही विचार दे करके ब्रह्मवर्चोसि का पालन करते हैं।

ब्रह्मवर्चोसि का पालन करें

ब्रह्मचर्य की रक्षा कैसे होती है? यह बड़ा एक विशिष्ट एक विचार हमारे समीप आता रहता है। मेरे प्यारे! ब्रह्मचर्य की रक्षा करने वाला श्वास पर गति कर रहा है। श्वास पर मन का और प्राणों का दोनों का समन्वय कर रहा है। जब तक प्राण और मन, दोनों का विभाजन रहेगा तब तक मानव ब्रह्मवर्चोसि नहीं बन सकता। जब मन और प्राण दोनों का परस्पर समन्वय हो जाता है, वह एकता के सूत्र में प्रवेश हो करके मुनिवरो! वह ब्रह्मवर्चोसि बनते हैं। तो पितृजन, आचार्यजन इसी प्रकार ब्रह्मचारी को ब्रह्मचारी बनाने के लिए प्राणायाम की दीक्षा देते हैं। **हमारे यहाँ प्राणायाम भिन्न-भिन्न प्रकार से होता है।** एक प्राणायाम हमारे यहाँ सूर्य की किरणों के साथ गति करने वाला है। एक प्राणायाम हमारे यहाँ चन्द्रमा के रूपों में गति करने वाला है। एक प्राणायाम पृथ्वी के ऊपर गति करने से प्राप्त होता है। मेरे प्यारे! मुझे स्मरण है त्रेता के काल में भगवान् राम को इन प्राणों के ऊपर बड़ा आधिपत्य था। जब वशिष्ठ और माता अरुन्धती के चरणों में विद्यमान हो करके राम जब अध्ययन करते थे तो प्राणों का अध्ययन किया जाता था। वह प्राणों में पार्थिक आभा वाला जो प्राणायाम है, उसे वह किया करते थे। इसीलिए पृथ्वी के परमाणुओं का उन्हें बोध था और जहाँ पृथ्वी मानो उष्ण है, अन्नाद उत्पन्न कराने वाली है, उस पृथ्वी में वह अन्नाद की उत्पत्ति के लिए प्रयास करते रहते थे। जब यह विचार हमारे समीप आता है तो मेरे प्यारे! वह पार्थिक

आभावत्तियाम प्राणायाम कहलाता है। एक प्राणायाम यह है, मुनिवरो! योगी बनता है और योगेश्वर बनने के लिए हम प्राणायाम कर रहे हैं। **शीतल प्राणायाम** करके उसमें सूर्य प्राणायाम की पुट लगाते हैं। योगी अपने में योगाभ्यास कर रहा है भयङ्कर वनों में और वह खेत्री मुद्रा से, प्राण से उन परमाणुओं को ले रहा है जिन परमाणुओं में क्षुधा के शान्त करने की प्रवृत्तियाँ होती हैं। उन परमाणुओं को अपने उदर में प्रवेश करता है तो वह प्राणायाम कर रहा है और उन पोषक तत्वों को अपने में ग्रहण कर रहा है, उस अन्नाद को पान कर रहा है जिनको प्राणों की आवश्यकता है। आचार्यों ने यह कहा है कि हे ब्रह्मचारियो! यह प्राण ही तो निगलने वाला है। यह प्राण ही तो भोगता है। इसलिए प्राण को एकाग्र करके, मन को एकाग्र करके क्योंकि मन में इस पृथ्वी का विज्ञान है, ज्ञान है और यह प्राण उस परमाणु को गति दे रहा है। मन का और प्राण का दोनों का समन्वय होता है तो **ऋताम्बरी क्षेत्र** में जा करके वह मौन हो जाता है। संसार को जान करके यह खेत्री मुद्रा में लग जाता है और पोषक तत्त्वों को शीतली प्राणायाम के द्वारा अपने में ग्रहण कर लेता है। उसे क्षुधा नहीं लग पाती। वह मानो अपनी आभा में रत्त हो जाता है। तो मुनिवरो! विचार यह है कि बिना प्राणायाम के प्राण और मन दोनों का समझौता बिना किए अथवा दोनों का समन्वय किए बिना ब्रह्मवर्चोसि का पालन नहीं किया जा सकता।

मेरे प्यारे! आचार्यजनों ने ब्रह्मचारियों को सबसे प्रथम प्राण क्रिया को लाने के लिए ऊर्ध्वा में एक उपदेश दिया और कहा आओ विराजो। मेरे प्यारे! पंक्ति लगी हुयी है, आचार्यजन जो वानप्रस्थी जीवन को व्यतीत करने वाले हैं, वह विद्यालयों में शिक्षा दे रहे हैं। शारीरिक और आत्मिक बेटा! दोनों प्राणायाम करना है। इनमें बड़ा भेदन बन गया है। मेरे प्यारे! शारीरिक प्राणायाम वह कहलाता है मानो योग आचरणों में शरीर का हम शुद्धिकरण करते हैं और **आत्मिक प्राणायाम** वह कहलाता है, एकान्त स्थली में विद्यमान हो करके खेत्री मुद्रा से प्राणायाम कर

रहा है। प्राणायाम करके वह अन्तरिक्ष से पोषक तत्त्वों को अपने में ग्रहण कर रहा है और प्राण को प्रणव बना करके उसमें लय हो रहा है। उसमें ब्रह्माण्ड का दर्शन कर रहा है। यह प्राण की बड़ी विचित्र विवेचना रही है। मैं बेटा! आज उस क्षेत्र में जाने के लिए नहीं आया हूँ। बेटा! कोई काल था, समय था जब विद्यालय में प्राणायाम के आचार्य बनने का सौभाग्य प्राप्त होता रहा है। मैं इस सम्बन्ध में कोई विचार देना नहीं चाहता हूँ।

केवल सङ्केत करना है। आचार्यजन और राजा के यहाँ से घोषणा होती है राजा कहता है विद्यालयों में वह अन्नाद होना चाहिए, वह द्रव्य होना चाहिए जो दूषित न हो। मेरे प्यारे! ब्राह्मण को वह द्रव्य देना चाहिए जो शिक्षा दिला रहा है, जिससे निष्पक्ष किसी का विभाग न हो। अन्नाद भी पवित्र होना चाहिए। ब्रह्मचरिष्यामि बन करके अपनी आभा में नियुक्त हो जाते हैं। प्राण की महत्त्वता क्या है? ब्रह्मचारियों को आचार्य शिक्षा देता है कि यह जो तुम्हारे भुज हैं इन भुजों में पञ्चीकरण हो रहा है। प्रवृत्तियों में पञ्चीकरण हैं। ब्रह्मचारी कहते हैं प्रभु ऐसा क्यों आपने कहा हमारे एक भुज में पञ्चीकरण है। प्रवृत्तियों में पञ्चीकरण है। उसी पञ्चीकरण को ले करके हमारे जीवन की प्रतिभा को जन्म दिया जाता है और पवित्रता की वेदी पर लाया जाता है।

मेरे प्यारे! यहाँ **प्राणायाम कितने प्रकार के होते हैं।** एक सूर्य प्राणायाम, एक चन्द्र प्राणायाम, एक सङ्कल्प प्राणायाम, एक शीतली प्राणायाम, एक वृत्तिका प्राणायाम, एक ऊर्ध्वकेतु प्राणायाम कहा जाता है। मेरे प्यारे! इन प्राणायाम को करने वाला अपने में महान् वेत्ता बन जाता है और देवपूजा में वह रत्त हो जाता है। यह वायु कैसा हमारा पितृ है बेटा! जब प्राण को हम वायुमण्डल में से, वायु में से पोषक तत्वों को लेते हैं, हे वायु! तू हमारा देवता है। हे वायु! तू देवता बन करके हमारी रक्षा कर रहा है। तू प्राणसत्ता दे रहा है। उसी प्राणसत्ता को पाकर के हमारा जीवन एक महान् बन रहा है। पवित्रतम् बन रहा

है। मेरे पुत्रो! इस प्रकार जो अभ्यास करता है, अभ्यस्थ कराता है तो मुनिवरो! वह ब्रह्मचारी अपने में प्राणसत्ता को ग्रहण कर लेता है।

यौगिकवाद

आओ मेरे प्यारे! मैं एक विचार दे रहा हूँ, एक धारणा दे रहा हूँ। अपने किए हुए क्रियाकलापों की कुछ चर्चा कर रहा हूँ। महाराजा अश्वपति के यहाँ देवपूजा का उद्घोष हो रहा है। यही उद्घोष भगवान् राम के राष्ट्र में भी हुआ कि प्रत्येक गृह में याग होना चाहिए। प्रत्येक गृह में वेद की ध्वनि आनी चाहिए। यही वेद की ध्वनि आ करके हमारी राष्ट्रीयता और मानवीयता पवित्र बनती है। आज मैं विचार देना विशेष नहीं चाहता हूँ। विचार तुम्हें यह दे रहा हूँ कि प्रत्येक मानव को महान् बन करके, आचार्यों के चरणों में विद्यमान हो करके अपनी महानता का दर्शन करना चाहिए। पंक्तियों में विद्यमान हो करके माता अपने में देवपूजा, ब्रह्मयागों की चर्चा करती रहे और महान् बनाने के लिए पितृ भी चर्चा करते रहें। आचार्य कुल में वानप्रस्थ होने चाहिएँ जिससे उनके विचारों की तृप्त हुई जो तरङ्गें होती हैं वह ब्रह्मचारियों के हृदयों में प्रवेश कर जाएँ। विज्ञान प्रवेश कर जाएँ। राजा को चाहिए कि विद्यालयों में ब्रह्मचारियों को इस प्रकार के अन्नाद का प्रयत्न करना चाहिए जिनसे उसमें दूषित अन्न और द्रव्य न चला जाए। इस प्रकार का विचार जब राजा के राष्ट्र में होता है तो राजा का राष्ट्र पवित्र बनता है। समाज में एकता का सूत्र आता है। आचार्यजन महान् बन करके राष्ट्र और समाज को कर्त्तव्यवाद की वेदी पर लाने का प्रयास करते हैं। यौगिकवाद भी इसी में निहित होता है।

आज का हमारा यह विचार क्या कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए वेद के वाक्यों को ले करके हम अपने जीवन को महान् बनाएँ। ओजस्वी बना करके अपने में महान् बन जाएँ। हमारे यहाँ अतीत का जो काल है वह पवित्रतम् रहा है। उनमें एक

विचारधारा मुनिवरो! राजा अश्वपति के यहाँ वैज्ञानिकजन अपने में अनुसन्धान करते-करते, विचार इतना ऊर्ध्वा में रहना चाहिए कि अन्तरिक्ष में भ्रमण करना चाहिए और नाना लोक-लोकान्तरों की यात्रा होनी चाहिए जिससे समाज में ज्ञान और विज्ञान अनूठा बना रहै। जैसे माता अपने विचारों का विभाजन करके बालक का निर्माण करती है इसी प्रकार सूर्य की नाना प्रकार की किरणें विभाजन करके एक-दूसरे परमाणु और तरङ्गों को विभक्त करती रहती हैं, इसी प्रकार आचार्य के कुलों में अभ्यो बना रहता है। तो विचार-विनिमय क्या? आज का विचार यह कहता है कि हम पंक्ति लगा करके, एक पंक्ति में विद्यमान हो करके एक ही शिक्षा का विचार, एक सा ही क्रियाकलाप होना चाहिए तो राजा का राष्ट्र पवित्र बन जाता है, महान् बन जाता है। समाज में एक-दूसरे में समावेशता के तन्तुओं का जन्म हो जाता है।

आज का विचार हमारा यह कहता है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देवपूजा करते हुए, अपने जीवन को विचारशील बना करके इस संसार सागर से पार हो जाएँ। कल मेरे प्यारे महानन्द जी भी अपने कुछ विचार प्रकट करेंगे। वह अपनी विवेचना में बड़े उत्सुक हो रहे हैं। इनका बड़ा एक विचार बन रहा है कि मैं अपने विचार दूँ। आज का विचार यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए इस सागर से पार हो जाएँ। शेष विचार कल प्रकट करेंगे। कल मेरे प्यारे महानन्द जी भी विचार देंगे।

महर्षि महानन्द जी—अच्छा भगवन्!
पूज्यपाद गुरुदेव—ओ३म् शान्ति!

दिनाँक : 12 मार्च, 1986
समय : दोपहर 3 बजे
स्थान : लाक्षागृह बरनावा

॥ ओ३म् ॥

ऋषियों के उद्‌गार

1. वेद तो मानवता की घोषणा करता है कि आज हम मानव बनें।
2. मानव वह होता है जो मननशील होता है।
3. वेद का ऋषि कहता है कि मानव बनो और मानव से ही देवता बनते हैं।
4. हे मानव! तू संसार में याज्ञिक बन जितना भी शुभ कर्म है वह सर्वत्र ही यज्ञ कहलाया गया है।
5. प्रकृति सत् है, आत्मा सतभित है और परमात्मा सत्‌चित् आनन्द है।
6. आत्मा के जो सद्‌भाव हैं उन सद्‌भावों से जो सात्विकता मानो श्रद्धा उत्पन्न होती है उसका नाम यजमान कहलाया गया है।
7. संसार में यज्ञ होने चाहिए जहाँ पदार्थों की सुगन्धि होती है वहाँ विचारों में भी सुगन्धि आती है।
8. हे यजमान! तू वास्तव में इतना ऊँचा बन तेरी जो उड़ान है यह यज्ञशाला से लेकर के बृहस्पति और ध्रुव मण्डल तक होनी चाहिए।
9. जिस आहार और व्यवहार से ये इन्द्रियाँ पवित्र होती हों, उसी का नाम धर्म कहलाया गया है।
10. अन्न का दोष समाप्त होना चाहिए। राजा के राष्ट्र में ऋण नहीं होना चाहिए।
11. राष्ट्र होता चरित्र के लिए है। धर्म मानवता की रक्षा के लिए।
12. जब गुरुओं की अनुपम कृपा होती है, महापुरुषों की दया होती है मानो दृश्य ऊँचे बनते हैं, माना स्वर्ण बन जाते हैं।
13. ऋषि मुनियों के उपदेशों पर अपने जीवन को व्यतीत करने से मानव का जीवन महान बनता है।
14. जब ब्रह्मवेत्ताओं की कृपा होती है तो मानव ऊँचा बन जाता है, मानव महान् बन जाता है।
15. त्रुटियों को त्याग करके मानव को अपने जीवन को आग्नेय बनाना चाहिए यही मानव का वास्तविक कर्म है।

।। ओ३म् ।।

जन्मदिन की शुभकामनाएँ

मास्टर ऋत्विक

श्रीमति ब्रजबाला धर्मपत्नि श्री राजकिशोर त्यागी निवासी ग्राम मकनपुर, जिला गाजियाबाद, उ.प्र. ने अपने प्रिय पौत्र ऋत्विक सुपुत्र श्रीमति अञ्जली एवम् श्री हरिओम त्यागी के जन्मदिवस की शुभ बेला के आगमन पर प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी 1100 रु. का सात्विक सहयोग समिति के प्रकाशन के कार्य के लिए प्रदान किया है। त्यागी जी का परिवार पूज्यपाद-गुरुदेव के प्रति अत्यन्त आस्था एवम् श्रद्धा रखता है और उनके प्रवचनों का निरन्तर अध्ययन करते हुए और नित्य दैनिक अग्निहोत्र का अनुष्ठान करते हुए अपने परिवार एवम् सम्बन्धियों को ऊर्ध्व गति में ले जाने में निरन्तर प्रयत्नशील है।

इस परिवार से समिति को व श्री गांधी धाम समिति लाक्षागृह बरनावा को निरन्तर सहयोग प्राप्त होता रहता है जिसके लिए समिति हृदय से हार्दिक आभार प्रकट करती है और प्रिय सुपौत्र को जन्म दिवस की बारम्बार शुभकामनाएँ प्रदान करते हुए परिवार के सभी सदस्यों के लिए दीर्घआयु, सुख शान्ति एवम् सर्वतोन्मुखी समृद्धि के लिए परमात्मा से विनय करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

।। ओ३म् ।।

जन्मदिन की शुभकामनाएँ

रक्षित भारद्वाज

श्रीमति इन्दु भारद्वाज व श्री विपिन भारद्वाज निवासी ग्राम रई, जिला मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश ने अपने प्रिय सुपुत्र रक्षित भारद्वाज के बीसवें जन्मदिवस, दिनाँक 7 जून, 2018 के शुभ आगमन पर प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी 1100 रु. का सात्त्विक सहयोग समिति के प्रकाशन कार्य को प्रोत्साहित करने के लिए उदारता से प्रदान किया है जिसके लिए समिति हृदय से आभार व्यक्त करती है।

श्री भारद्वाज जी गुड़गाँव में सेवारत हैं और वहीं पर अपने परिवार सहित अपने जीवन को अपने कार्य के साथ-साथ वैदिक परम्परा से सम्पन्न करने में प्रयत्नशील हैं। समस्त परिवार पूज्यपाद गुरुदेव से विशेष प्रभावित है और उनके साहित्य का अध्ययन करते हुए यागों में अपनी आहुति प्रदान करके अपने जीवन को निरन्तर यज्ञमयी बनाने में सदैव अग्रणीय रहता है।

ऐसे श्रद्धालु एवम् याज्ञिक परिवार के सहयोग का समिति पुनः से आभार प्रकट करती है और उनके सौभाग्यशाली पुत्र के जन्मदिवस पर बारम्बार शुभकामनाएँ देते हुए समस्त परिवार के लिए सुख, शान्ति, दीर्घायु व सर्वतोन्मुखी समृद्धि के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

*1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	80.00
*2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	80.00
3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	60.00
*4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	100.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	60.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	80.00
7.	वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	25.00
8.	आत्म-लोक	35.00
9.	धर्म का मर्म	40.00
10.	शंका-निवारण	35.00
11.	यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्व	40.00
12.	आत्मा व योग-साधना	35.00
*13.	देवपूजा	50.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	125.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	125.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	125.00
17.	रामायण के रहस्य	35.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	45.00
19.	महाभारत के रहस्य	30.00
20.	अलङ्कार-व्याख्या	35.00
21.	रावण-इतिहास	50.00
22.	महाराजा-रघु का याग	30.00
23.	वनस्पति से दीर्घ-आयु	35.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	35.00
25.	चित्त की व वृत्तियों का निरोध	35.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	35.00
27.	पञ्च-महायज्ञ	35.00
28.	अश्वमेघ-याग और चन्द्रसूक्त	40.00
29.	याग-मन्जूषा	40.00
30.	आत्म-दर्शन	30.00
31.	पुत्रेष्टि-याग और मात-दर्शन	30.00
32.	याग और तपस्या	60.00
33.	यागमयी-साधना	35.00
34.	यागमयी-सृष्टि	35.00
35.	याग-चयन	40.00
36.	दिव्य-रामकथा	120.00
37.	ज्ञान-कर्म-उपासना	35.00
38.	दिव्य-ज्ञान	40.00
*39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	90.00
40.	महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	40.00
41.	आत्म-उत्थान	40.00
42.	तप का महत्व	40.00
43.	अध्यात्मवाद	40.00
44.	ब्रह्मविज्ञान	40.00
45.	वैदिक-प्रभा	35.00
46.	प्रकाश की ओर	35.00
47.	कर्तव्य में राष्ट्र	40.00
48.	वैदिक-विज्ञान	35.00
49.	धर्म से जीवन	35.00
50.	आत्मा का भोजन	40.00
51.	साधना	35.00
52.	त्रेताकालीन-विज्ञान	40.00
53.	यज्ञोमयी-विष्णु	40.00
54.	यौगिक प्रवचन माला भाग-6	80.00
55.	स्वर्ग का मार्ग	50.00
*56.	यौगिक प्रवचन माला भाग-7	80.00
57.	माता मदालसा	60.00
58.	यौगिक प्रवचन माला भाग-8	80.00
59.	यौगिक प्रवचन माला भाग-9	80.00
60.	यौगिक प्रवचन माला भाग-10	80.00
61.	याग एक सर्वाङ्ग पूजा	80.00
62.	यौगिक प्रवचन माला भाग-11	80.00
*63.	यौगिक प्रवचन माला भाग-12	80.00
64.	मानव कल्याण की चर्चाएँ	50.00
65.	प्रभु-दर्शन	50.00
*66.	यौगिक प्रवचन माला भाग-13	80.00
*67.	समाज उत्थान का मार्ग	50.00
*68.	यौगिक प्रवचन माला भाग-14	80.00
*69.	ब्रह्म की ओर	50.00
*70.	ईश्वर मिलन	50.00
*71.	यौगिक प्रवचन माला भाग-15	80.00
*72.	यौगिक प्रवचन माला भाग-16	80.00
*73.	नैतिक शिक्षा	50.00
*74.	यौगिक प्रवचन माला भाग-17	100.00
*75.	आत्मिक ज्ञान	60.00

*सहजिल्द का मूल्य 20 रु. अतिरिक्त है।

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

योगनिष्ठ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवाणी का साहित्य सँहिता, कैसेट्स, सी. डी. व डी. वी. डी. के रूप में निम्न स्थानों पर उपलब्ध हैः–

1. श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरनावा, जिला–बागपत, (उ.प्र.)। मोबाइल नं 09719622950
2. श्री गुरुवचन शास्त्री, मकान नं. 165/30ए, दक्षिण भोपा रोड़, निकट माढ़ी की धर्मशाला, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)। मोबाइल नं. 09412888050
3. सुश्री. नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-3, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-41721294
4. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, A-59 पंचशील एन्क्लेव नई दिल्ली-110017 दूरभाष नं. 011-41030481
5. श्री जितेन्द्र चौधरी, ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मो. नं. 9811707343
6. श्री अनिल त्यागी सी-47 रामप्रस्थ, गाजियाबाद (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-4165802
7. श्री आशीष त्यागी, सुपुत्र श्री सुशील त्यागी डी-293, रामप्रस्थ, पोस्ट ऑफिस चन्द्रनगर, गाजियाबाद पिन कोड-201011 (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-2642052
8. श्री लोमश त्यागी, 106/4 पंचशील कालोनी गढ़ रोड़, मेरठ, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09410452076
9. श्री विवेक त्यागी, 16ए, आलोक कॉलोनी, अल्कापुरी, हापुड़, (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0122-2316196
10. श्री संजीव त्यागी, 1107, सैक्टर-3, बल्लभगढ़, फरीदाबाद हरियाणा। मोबाइल नं. 09910589486
11. मैं. हर्ष मेडिकोज, ए-2/31, सैक्टर-110–मार्किट नोएडा, फेस-2, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9899228860, 9871367937
12. पवन त्यागी सुपुत्र श्री राजाराम त्यागी, मौ. खड़खड़ियान, माता, ग्राम खरखौदा, जिला मेरठ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 7536097171
13. श्रीमती बाला, 251, दिल्ली गेट, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23282088
14. डॉ. अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जिला-जे. पी. नगर (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09412139333
15. श्री सुमन कुमार शर्मा, जे-380, सैक्टर बीटा-2, ग्रेटर नोएडा, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09313530505
16. श्री सतीश भारद्वाज, ग्राम बहेडी, रोहाना मिल, जिला मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)।
17. मैं. विजय कुमार, गोविन्द राम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23977216

मासिक सहयोग

श्री हरीराम गुप्ता, केसर स्टील, वजीरपुर, दिल्ली	1000 रुपये
श्री चिंतामणि त्यागी एवं श्री जगमोहन त्यागी बरला, मुजफ्फरनगर	1000 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद, हरियाणा	1000 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	500 रुपये
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव चावला, आणद, गुजरात	250 रुपये
श्री राकेश शर्मा, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा	250 रुपये
श्री कृष्ण लाल बत्रा, इन्द्री, जिला करनाल	201 रुपये
मास्टर कवन्धि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सिद्धार्थ त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज दिल्ली	101 रुपये
कुमारी अञ्जलि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सात्विक त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज दिल्ली	101 रुपये
मास्टर अभ्युदय त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये

नम्र-निवेदन

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज ने अपने प्रवचनों में वेदमन्त्रों का गान करते हुए उनकी प्रचलित भाषा में व्याख्या की है। उसी अमृत वाणी को जनकल्याण के लिए ''सँहिता'' रूप में प्रकाशित करने के लिए वैदिक अनुसन्धान समिति सभी श्रद्धालु एवम् दानदाताओं से सहयोग के लिए आह्वान करती है जिससे कि प्रकाशन का कार्य सुचारू रूप से ऊर्ध्वा गति को प्राप्त होता रहे। सहयोग की राशि समिति के बैंक खाते में स्वेच्छानुसार भेजने के लिए बैंक का विवरण निम्न प्रकार से है–

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

पंजाब नैशनल बैंक, खान मार्केट, नई दिल्ली

बैंक खाता नं. - 0149000100229389, IFSC Code – PUNB–0014900

website : www.shringirishi.in

Email : contact@shringirishi.in

योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

उद्‌बोधन

हम परमपिता परमात्मा की उपासना करते हुए यज्ञशाला में परणित होते हुए अपने विचारों का यज्ञ करते चले जाएँ। नाना प्रकार का संकल्प के साथ में हमारा एक मानसिक संकल्प हो, प्राण का ही उसमें निदान हो, उसके पश्चात् जब हम उसमें आहुति देते हैं तो वह आहुति द्यौ लोक को प्राप्त होती है। देवतागण उसको प्राप्त करते हैं और देवता जब तृप्त होते हैं तो राष्ट्रवाद को क्या, समाज को पवित्र बनाते चले जाते हैं। परमाणुवाद को ऊँचा बनाते चले जाते हैं। क्योंकि यह जितना जगत है यह सब परमाणुओं की ही रचना है। द्यौ लोक का जो घृत है उसमें कितने सूक्ष्म परमाणु होते हैं, और वह परमाणु जब अग्नि-उद्‌गाता बन करके और वायु अध्वर्यु बन करके जब उसका साकल्य उसमें प्रदान किया जाता है तो द्यौ लोक में कितनी महान गति होती है, कितना मानव का हृदय स्वच्छ और पवित्र होता है, ममता से रहित होता है, नाना प्रकार की विडम्बनाओं से रहित होता है उतना ही द्यौ लोक को मानव का संकलन प्राप्त होता चला जाता है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

वर्ष 46 : अंक : 550
जुलाई 2018

मूल्यः
दस रुपये

RNI No. 23889/72
Delhi Postal R. No. DL (S)-01/3220/2018-2020
Licence to Post without prepayment
U (SE)-70/2018-2020
POSTED AT N.D.PS.O ON 10/11-07-2018
Published on 5th day of the same month